INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2023

सीधी जिले के कामकाजी महिलाओं का सामाजिक महत्व की दशा एवं सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन का अध्ययन

प्रतिमा कौल[1] , डॉ. एस.एम. मिश्रा[2]
[1]शोधार्थी समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र,संजय गांधी स्मृति शासकीय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

सारांश –

किसी भी समाज में महिला की स्थिति उस समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधार पर सुनिश्चित होता है। आज 21वीं सदी में महिला दशा में काफी बदलाव आ चुका है। महिलाएं जो परम्परगत भूमिकाओं में बंधकर केवल घर के चारदिवारी के भीतर के उत्तरदायित्वों को पूर्ण करती थीं। वह बाहर के कार्यक्षेत्रों में कार्य करने का विचार कदापि भी नहीं करती थी, अब वे पारिवारिक दायित्वों के साथ–साथ प्रशासनिक एवं व्यवसायिक भूमिकाओं का भी निर्वहन कर रही हैं। विभिन्न महिला आन्दोलनों एवं सरकारी प्रयत्नों के परिणामस्वरूप महिलाओं की दशा में कई बदलाव दृष्टिगोचर हुआ है। हमारे राष्ट्र का जैसे–जैसे आर्थिक विकास तीव्र गति से बढ़ रहा है, वैसे–वैसे अन्य पदों पर कार्य करके देश की प्रगति में सहभगिता प्रदान कर रही हैं।

मुख्य शब्द – कामकाजी महिला, सामाजिक दृष्टिकोण एवं पारिवारिक दायित्व ।

प्रस्तावना –

अधिकांशतः यह दृष्टिगत होता है कि कार्यस्थल में कार्य निर्वहन करने वाली महिलाएं अपने सास ससुर, माता पिता, पति एवं अन्य सगे सम्बन्धियों के साथ रोजगार की खोज करने में ग्रामीण अंचलों से निकलकर नगरों की तरफ आती हैं। महिलाओं की इस प्रवासिता का प्रमुख वजह परिवार की आय में बढोत्तरी करना होता है। कामकाजी महिलाओं में सबसे अधिक विवाहित महिलाओं की संख्या होती है। एक परीक्षण के अनुसार विवाहित महिलाओं का अनुपात भिन्न–भिन्न कार्यस्थलों में 50–80 प्रतिशत तक पायी गयी है। समाज में बाल विवाह और पुर्नविवाह परम्पराओं की वजह से विवाहित महिलाओं की बहुलता मिलती है। राष्ट्र की धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं की वजह से कम आयु वर्ग में ही विवाह सम्पन्न हो जाती है, अधिकांशतः कामकाजी महिलाओं की उम्र 20–45 साल के मध्य होता है।

पिछले कुछ वर्षों से महिलाओं की जीवन शैली में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल रहे हैं, जिनसे उनके व्यवहार, मूल्य, संवेदनाओं एवं प्रेरणा शक्ति ही प्रभावित नहीं हुई है अपितु आज के जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ भागीदारी कर रही है। सामाजिक बदलाव के घुमते चक्र के कारण महिलाओं को परम्परागत रूढ़िवादी भूमिका से काफी हद तक मुक्ति मिल रही है, हालांकि इस प्रक्रिया में अनेकों कानूनी प्रावधानों के सकारात्मक भूमिका निभाई है। अब महिलायें मात्र गृहणी तक सीमित नहीं हैं अपितु अधिपत्य जबाबी एवं परिपक्व महिला के रूप में सहज देखी जा सकती है। भारत में इन सामाजिक परिवर्तनों का असर शहरी

शिक्षित महिलाओं में और उसमें भी विशेष रूप से मध्यम वर्ग की महिलाओं पर अधिक पड़ा है। शहरीकरण शिक्षा और रोजगार जो कि इस बदलाव की देन है, वे उन्हें अपने व्यक्तित्व को निखारने की भिन्न–भिन्न मांगों से जो अक्सर एक दूसरे से सर्वथा विपरीत होती है, के कारण कामकाजी महिलाओं को बार–बार दोनों भूमिकाओं को निभाने में अन्तर्द्वन्द का सामना करना पड़ता है। महिला होने के नाते भी कर्तव्य के साथ–साथ उसे सुसंस्कृत गृहिणी की भूमिका का भी निर्वाह सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए करना पड़ता है। अभी तक जितनी भी आर्थिक व सामाजिक प्रणालियों का ज्ञान है, उन सभी में महिलाओं से काम लिया जाता रहा है बल्कि शायद उनसे काम लेने की जरूरत भी महसूस की जाती रही है और लगभग सभी ऐसी प्रणालियों में वे अपना जीवनयापन के लिए और मानव होने के नाते अपने संतोष के लिए काम करती है।

पिछले तीन दशकों में मध्य वर्ग की कामकाजी स्त्रियों की संख्या में जबरदस्त बढ़ोत्तरी हुई है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व और उसके कुछ समय बाद एक भी मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की स्त्रियां अधिकतर अपने घरों की चहारदीवारी में ही सिमटी रहती थी। राष्ट्र के निर्माण में स्त्रियों का योगदान काफी महत्व रखता है लेकिन राष्ट्र की आर्थिक प्रगति और विकास में भी स्त्रियों की भूमिका कुछ कम महत्व नहीं रखती। इस महान और मजबूत स्त्री शक्ति की और साथ ही राष्ट्र के विकास और आर्थिक प्रगति के मामले में ज्यादा फायदा उठाया जा सके। यह तभी संभव होगा जब स्त्रियों को सम्मान दिया जाए और इसके साथ ही उनकी शक्ति को राष्ट्र के लाभ के लिए और स्त्रियों का दर्जा उठाने के लिए सही रास्ते पर लाया जाए।

शहरों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति और संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, लेकिन छोटे कस्बों और गांवों में स्थिति बहुत अच्छी नहीं है, अभी कुछ समय पूर्व कामकाजी महिलाओं के संदर्भ में एक अध्ययन किया गया जिसके नतीजों का उल्लेख यहां प्रासंगिक होगा। इस अध्ययन के मुताबिक अधिकतर कामकाजी महिलाएं 20 से 45 वर्ष की आयु वर्ग की होती है अर्थात् आजादी के बाद जन्मी महिलाएं ही आज घर से निकलकर बाहर का काम संभाल रही हैं। इनमें भी 20–25 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं की संख्या अधिक है जिसका अर्थ है कि आजकल सभी शिक्षित महिलायें किसी न किसी रोजगार में लग रही हैं। लगभग 60 प्रतिशत कामकाजी महिलायें ऐसी होती है जिनका जन्म शहरी क्षेत्र में होता हैं चूंकि ग्रामीण महिलाओं की परम्परायें उन्हें नौकरी करने की इजाजत नहीं देती और उनके पास अवसर भी बेहद सीमित होते हैं। इसलिए कामकाजी महिलाओं में ग्रामीण महिलाओं का प्रतिशत कम होता है जो ग्रामीण महिलायें काम काज करती हैं, वे साधारणतः अपने पारिवारिक धंधों से जुड़ी होती हैं, शहरों में वही ग्रामीण महिलायें नौकरी आदि करती हैं, जो उच्च शिक्षा के लिए पहले ही शहर आ चुकी होती है। कुछ कामकाजी महिलाओं में लगभग 21 प्रतिशत महिलायें ऐसी होती है जिनका जन्म तो ग्रामीण क्षेत्र में होता है लेकिन उनके परिवार 15–20 वर्ष पहले ही शहर में आकर बस गये थे।

अधिकतर कामकाजी महिलायें एकल परिवार से होती है। संयुक्त परिवारों की बहुत कम महिलाएं कामकाज के सिलसिले में घर से बाहर जाती है। भारत में कोई भी अध्ययन बिना जातिगत संदर्भ के अपूर्ण माना जाता है। एक अध्ययन के मुताबिक सबसे अधिक कामकाजी महिलायें ब्राह्मण जाति से सम्बन्ध रखती हैं। इस मामले में दलित जाति की महिलाओं का प्रतिशत बेहद कम है।[1] धर्म के आधार पर देखें तो भारत के 85 फीसदी से भी अधिक कामकाजी महिलायें हिन्दू धर्म को मानने वाली होती है। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि अधिकतर कामकाजी महिलायें शिक्षित और उच्च शिक्षित होती हैं लेकिन फिर भी लक्ष्य यह है कि 18 प्रतिशत कामकाजी महिलायें निरक्षर होती हैं जबकि 12 फीसदी महिलायें बस साक्षर ही होती हैं।

विश्लेषण –

सीधी जिला भौगोलिक दृष्टिकोण से उत्तरी पूर्वी गोलार्द्ध में भू–मध्य रेखा के $22^0 47'5''$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 42'10''$ उत्तरी अक्षांश तक और $81^0 18'40''$ पूर्व देशान्तर से $82^0 48'30''$ पूर्व देशान्तर के बीच विद्यमान है। भारत के प्रादेशिक बटवारा की दृष्टिकोण से सीधी जिला राष्ट्र के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के उत्तरी पूर्वी भाग में बघेलखण्ड प्रदेश के परिक्षेत्र में विस्तारित है। जिला के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है।[2]

सीधी जिला में स्थान–स्थान पर पर्वत मालाओं से होकर नदियों का जल प्रवाह देखने में काफी मनोरम लगता है। यह भाग प्रकृति के अभूतपूर्व सौन्दर्य से परिपूर्ण है। समस्त जिला कैमोर पर्वत श्रेणियों के दक्षिणी में फैली हुयी है। कैमोर पर्वत श्रेणियां पश्चिमी भाग से पूर्वी भाग की तरफ समानान्तर सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र सीधी

जिले में विस्तारित है।

भारत में कुल कार्यशील जनसंख्या का मात्र 39.1 प्रतिशत ही है अर्थात् सौ में से केवल 39 लोग ही विभिन्न रोजगारों से लगे हुए हैं। इसमें भी पुरूषों का प्रतिशत बेहद अधिक है और कार्यशील महिलाओं का अनुपात बहुत कम, कुल कार्यशील महिलाओं में से भी अधिकांश कृषि, खनन जैसे प्राथमिक क्षेत्रों में श्रमिकों के रूप में कार्यरत हैं, जहां उन्हें बेहद प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के सरकारी कार्यालयों और कार्पोरेट जगत में ऊंचे स्थान पर विराजमान महिलाओं, मीडिया पर लगभग कब्जा किये आधुनिक लड़कियों और सड़कों पर तेज गति से लम्बी गाड़ियों में फर्राटा भरती आधुनिक युवतियों को देखते हैं तो लगता है कि भारत की महिलाओं ने काफी तरक्की कर ली है परंतु यह एक अपूर्ण तथ्य है सच्चाई नहीं है। इनमें से मध्यम वर्ग की नौकरी करने वाली महिलाओं की संख्या का अनुपात अपेक्षाकृत कम है। प्रशासन और प्रबन्धन में उच्च पदों पर काम करने वाली महिलाओं का अनुपात तो लगभग नगण्य ही है।

भारत सरकार के एक अध्ययन के अनुसार भारत में सबसे अधिक महिलायें, कृषि और खनन जैसे प्राथमिक क्षेत्रों में काम करती हैं। ईंट के भट्ठों जैसे असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं का अनुपात भी कुछ कम नहीं है। महिलाओं की हैसियत में असमानता का आलम यह है कि एक तरफ तो महानगरों की कुछ प्रतिशत (लगभग नगण्य) गर्भवती महिलाओं को पंचसितारा सुविधायें प्राप्त होती है। प्रत्येक सप्ताह उनकी और गर्भस्थ शिशु की बारीकी स्वास्थ्य जांच होती है और उनकी प्रसव पीड़ा को न्यूनतम करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है तो दूसरी ओर ईंट भट्ठों और खेतों में काम करने वाली ऐसी गर्भवती महिलायें भी हैं जो प्रसव के दिन तक आधे अधूरे पेट से ईंट पाथती रहती हैं और जब प्रसव पीड़ा होती है तो साथ की श्रमिक महिलायें ही धोती की छांव में प्रसव क्रिया सम्पन्न करा देती है और एक जीवन को जन्म देने के एक दो घंटे बाद ही ये महिलायें फिर से काम पर जुट जाती है क्योंकि रात की रोटी का इंतजाम करना उनका सबसे बड़ा लक्ष्य होता है। ये श्रमिक महिलाओं की वास्तविकता है, जमीनी हकीकत है।[3]

प्रस्तुत शोध अध्ययन सीधी जिले की सेवारत कामकाजी महिलाओं के समाजशास्त्रीय व्याख्या से सम्बन्धित है। कामकाजी महिलाओं में अन्तर्द्वन्द के भूमिका के वास्तविक स्थिति का गहन अध्ययन करने हेतु यह आवश्यक है कि हम जिले की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक दृष्टिकोण में हुए परिवर्तनो का अध्ययन करें, अतः कामकाजी महिलाओं से स्वयं सम्पर्क स्थापित कर शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सामाजिक परिदृश्य से सम्बन्धित समंकों का संग्रहण कर निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत अध्ययन किया है, जो इस प्रकार है–

कामकाजी महिलाओं का सामाजिक महत्व की दशा –

जिले में सेवारत कामकाजी महिलाओं से प्राथमिक स्तर पर सामाजिक महत्व मिलने से सम्बन्धित प्राथमिक समंकों को साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित कर सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषण किया गया है –

सारणी क्रमांक 1
सीधी जिले की कामकाजी महिलाओं का सामाजिक महत्व के सम्बन्ध में विवरण

क्रमांक	प्रत्युत्तरों का विवरण	संख्या	प्रतिशत
1	सामाजिक महत्व मिलता है	198	66
2	सामाजिक महत्व नहीं मिलता है	102	34
	योग	300	100

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से सुस्पष्ट होता है कि यह जिले की कामकाजी महिलाओं का सामाजिक महत्व के सम्बन्ध में विवरण से सम्बन्धित है जिनमें 198 कामकाजी महिलाओं ने बतलाया कि सामाजिक महत्व मिलता है, जिनके लिए 66 है। इसी प्रकार 102 कामकाजी महिलाओं ने बतलाया कि सामाजिक महत्व नहीं मिलता है जिनके प्रतिशत 34 है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि जिले की सर्वाधिक

चयनित महिलाओं ने बतलाया कि नौकरी करने की वजह से समाज में उनका काफी मान सम्मान प्राप्त हो जाता है। परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण उनके प्रति सकारात्मक है क्योंकि वह अपनी आय से परिवार के जरूरतों को पूर्ण करती हैं। परिवार के साथ–साथ समाज के व्यक्ति भी आदर व सम्मान के साथ उनसे व्यवहार करते हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका निभाना होता है, घरेलू और बाहर, यानि इन्हें अपने घर–परिवार और रिश्ते नाते के साथ–साथ कार्यालय सभी को उत्तम तरीके से चलाना पड़ता है तथा इनमें प्रमुख हैं दोनों के मध्य संतुलन, क्योंकि किसी एक पक्ष की गलती करने के कारण जीवन की गाड़ी डगमगाने लगेगी। स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात महिला शिक्षा की दशा में काफी सुधार की वजह से उच्च मध्यवर्गीय के साथ–साथ सामान्य शहर के मध्यम वर्ग के परिवारों की महिला भी शिक्षा प्राप्त की है, अनेक महिलाओं ने उनमें सफलता भी हासिल किया है, परंतु पितृवादी विचार सदैव इनके आड़े आता है जो इनकी समस्याओं की वजह बनती है। घर के बाहर की समस्या कार्यालय में आज भी पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या न्यून है। परिणामस्वरूप वे सम्पूर्ण प्रकार से सहज नहीं हो पाता है। ऑफिस में सेक्सुअल ह्रासमेंट का भय, महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान न करना, अपने सहकर्मी से पर्याप्त सम्मान नहीं पाना, जैविक कार्यों हेतु पर्याप्त छुट्टी नहीं मिलना, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मजाक बनाना तथा महिलाएं सर्वाधिक असंगठित भागों में ही हैं, अतएव जीवन व व्यवसाय आदि की असुरक्षा एवं निम्न/कम वेतन इत्यादि के कारण से महिलाओं की स्थिति दयनीय है। चूंकि पारम्परिक स्वरूप से घरेलू महिलाओं को ही करना होता था, परन्तु तब उनकी दशा भिन्न थी, क्योंकि महिलाएं तब केवल घरेलू कार्यों को ही करती थी, परन्तु आज महिलाएं घर से बाहर निकलकर कार्य सम्पन्न करने लगी हैं। तब भी महिलाओं से ही समस्त घरेलू कार्यों को करने की उम्मीद किया जाता है। एक कामकाजी महिला को कामकाजी पुरूष से दुगनी कार्य करनी पड़ती है। घर में बच्चे, पति और सास, ससुर आदि सम्पूर्ण लोगों का ध्यान रखना महिलाओं की ही जिम्मेदारी माना जाता है।

संदर्भ –

[1] प्रमिला कपूर – कामकाजी भारतीय नारी, दिल्ली विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 1974, पृष्ठ 57

[2] National Survey of India, Topographical Sheet No. 63H, 63E, 64I and 64E

[3] डॉ. मंजू सिंह – शिक्षित महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन, पृष्ठ 97, प्रिंटवेल जयपुर, संस्करण 1981